

# सौदी दिवाळीची लावणी

(चाल : लटपट लटपट)

[पार्श्वभूमी: सौदी अरेबियात मराठी मंडळी बरीच आहे. गावोगाव दिवाळी उत्साहाने साजरी होते. पण हे सगळं चोरून करावं लागतं. चार भिंतींच्या बाहेर तिचा सुगावाही लागू देऊन चालत नाही. ह्या दिवाळीच्या संगतीत काही वर्षे रमून इथले रसिक पुन्हा नवनव्या देशात नशीब काढायला जातात; जाताना हिच्या आठवणी सोबत नेतात. अशा या चोरपावलांनी येणार्या, जगभर हुंरहूर लावणार्या, नखरेल दिवाळीसुंदरीची ही लावणी.]

दबकत दबकत। सदा लपतछपत।  
पाऊल न वाजवत। चोरूनच खुणावत।  
दिवाळि येते।  
येते सौदी गावात।  
मिरवते भिंतींच्या आत।  
झुगारुन बुरख्याची कात। झुगारुन बुरख्याची कात।  
नागफणी। हिरकणी। रुपखनी। देखणी। साजणी।  
ठसक्यात ठुमकत। ठुमकत ठसक्यात। दिवाळि येते।

अनारात थिरकते। चक्रिं गिरकते। गुपित जपते।  
धडधडा आवाज न करते।  
फटाकडी। फुलझडी। आगिनफुलांनी सजते।  
फटाकडी। फुलझडी। आगिनफुलांनी सजते।  
माळुनी पणत्या झिरमिळते।  
माळुनी पणत्या झिरमिळते।  
दीपमाळा घाली गळां; भांगात रांगोळी भरते।  
नवरसरंगी नाटक ल्याली शालू नखर्यात।  
लखलखे विनोद काठात।  
भर्जरी गाणी पदरात। भर्जरी गाणी पदरात।  
ढंगदारा गुलजारा शिणगारा करी वारा अलवारा।  
घुमवत रमवत, रमवत घुमवत, दिवाळि येते।

गोडि हिची बेळगावी। चटका जळगावी। झणका पुणेरी।  
बहुढंगी अदाकारी।  
हिंदुस्थानी मनराणी, आशिकांची दिलप्यारी।  
हिंदुस्थानी मनराणी, आशिकांची दिलप्यारी।  
हिचे मैतर चंचल भारी।

हलुके डैतर चंचल डररी।  
नवे डेती, कुने कुती। रोज शलंगण सुवारी।  
गणगोत हलुका डुलुखगलरीवर दूर दूर डरंगे।  
कगडरी डरद हलुकी रंगे।  
डरठी रसलकुरंकरुडर संगे।  
कुकणरत। कुरररररत। कंनडरत। कतरररत। दरनररत।

आठवणी सकवत। नरतीं नरीं रुकवत।  
दलवलुके डेते। डेते सौदी गरवरत।  
डलरवते डलंतींकरुडर आत।  
ङुगररुन डुरखुडरकी करत।

डुॉ. उकुकुवलर दळवी  
कुडुडैल, सौदी अरेडररर।  
दलवलुकी २००ॢ